पैगंबर मुहम्मद की विस्तृत जीवनी - मदीना अवधि (3 का भाग 2)

रेटिंग:

विवरण: ?????? ??????? ?? ????? ?????? ?? ??? ?? ???? ???? ?? ???? ???? ?? ????? ???? ???? ???-??? ?? ???? ??? 2: ????????? ?? ????? ????????? ?? ??????, ?? ???? ?? ??? ?? ??????

श्रेणी: पाठ > पैगंबर मुहम्मद > उनकी जीवनी

द्वारा: Imam Mufti (© 2016 NewMuslims.com)

प्रकाशित हुआ: 08 Nov 2022

अंतिम बार संशोधित: 07 Nov 2022

उद्देश्य

·मदीना मे नए दुश्मनों के बारे में जानना।

·सहयोगियों के विश्वासघात के बारे में जानना।

·उहुद और खाई की लड़ाई के बारे में जानना।

मदीना मे नए दुश्मन

मदीना में दो नई शत्रुतापूर्ण ताकतों का उदय हुआ, विशेष रूप से बद्र की लड़ाई के बाद।

मदीना में अभी भी कई अरब ऐसे थे जो मूर्तिपूजा मे लगे हुए थे और इस्लाम से घृणा करते थे जैसे अब्दुल्ला इब्न उबैय और उनके अनुयायी। हालांकि, बद्र में जीत के बाद, उनमें से ज्यादातर ने मुस्लिम होने का दावा किया, कम से कम बाहरी तौर पर। उनके व्यवहार से यह स्पष्ट था कि उनके दिल में सच्ची आस्था नहीं आई थी, लेकिन उन्होंने मुस्लिम होने का दिखावा करने का राजनीतिक फायदा देखा। क़ुरआन के कई छंद सच्चे मुसलमानों को पाखंडियों के इस समूह से समुदाय को होने वाले खतरे के बारे में सूचित करते हुए प्रकट हुए थे। हालांकि, पैगंबर (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) ने कभी किसी को अलग नहीं किया और अपने अनुयायियों से लोगों को उनके व्यवहार से आंकना सिखाया।

दूसरा खतरा यहूदी कबीलों से आया जो सदियों से मदीना के अंदर और आसपास रहते थे। मदीना पहुंचने पर, पैगंबर ने यहूदी जनजातियों के साथ उनके और मुसलमानों के बीच संबंधों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने के लिए एक संधि की थी। समझौते के मुख्य तत्वों में शामिल थे: मुस्लिम और यहूदी दोनों अपने-अपने धर्म का पालन करने के लिए स्वतंत्र थे, विदेशी दुश्मन के हमले की स्थिति में वे एक-दूसरे का समर्थन करेंगे और मुसलमानों के खिलाफ कुरैश के साथ कोई संधि नहीं की जाएगी। कई यहूदी अपने पैतृक गौरव के कारण पैगंबर को नीचा दिखाते थे। लेकिन पैगंबर ने मुसलमानों को उनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करना सिखाना जारी रखा। बाद में एक रहस्योद्घाटन हुआ कि मुसलमानों को शास्त्र के लोगों द्वारा वध किए गए मांस खाने और यहां तक कि उनके साथ विवाह करने की अनुमति है। कुछ यहूदियों ने तो इस्लाम कबूल भी कर लिया। मदीना के प्रमुख रब्बियों में से एक अब्दुल्ला इब्न सलाम का मानना था कि तौरात में अल्लाह के दूत का उल्लेख किया गया है और उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया।

क़ायनुका का विश्वासघात

बद्र के युद्ध के कुछ महीने बाद, पैगंबर को खुफिया जानकारी मिली कि कायनुका जनजाति के यहूदी जो मदीना के अंदर रहते थे, अपने वचन को तोड़ने की योजना बना रहे थे। कयनुका युद्ध के लिए तैयार थे इस उम्मीद में कि कुछ पाखंडी वादे के अनुसार उनकी सहायता करेंगे। दो सप्ताह के बाद बिना किसी आपूर्ति या बाहरी सहायता के, उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया। उन्हें वहां से जाने और क्षेत्र के आसपास कुछ अन्य यहूदी जनजातियों के साथ निवास के लिए कहा गया।

उहुद की लड़ाई

3 हिजरी मे, पैगंबर को खुफिया जानकारी मिली कि मदीना पर हमला करने के लिए 3000 सैनिक रास्ते मे हैं। पैगंबर ने 1000 सैनिकों की एक सेना इकट्ठी की और अपने साथियों से सलाह ली कि क्या सेना से खुले मे युद्ध करना ठीक है या शहर में रहकर बचाव करना। पैगंबर ने उनकी बात मानी और सेना मदीना से लगभग दो मील दूर उहुद पर्वत के लिए निकल पड़ी, जहां वे दुश्मन से युद्ध करने वाले थे। रास्ते मे, अब्दुल्ला इब्न उबैय (पाखंडियों के नेता) ने मुस्लिम सेना को छोड़ने का फैसला किया क्योंकि शहर मे रहने की उसकी सलाह नहीं मानी गई थी। वह और उसके लोग, जो सेना का एक तिहाई हिस्सा थे, पीछे हट गए।

पैगंबर ने एक छोटे से पहाड़ी दर्रे की रक्षा के लिए पास की पहाड़ी पर 50 धनुर्धारियों को तैनात किया क्योंकि इस पहाड़ी दर्रे का दुश्मन उपयोग कर सकते थे। लड़ाई शुरू हुई और मुसलमानों ने कुरैश पर

विजय प्राप्त करना शुरू कर दिया। कुरैश का युद्ध-झंडा गिर गया और वे पीछे हटने लगे, जबकि मुस्लिम सैनिक उनका पीछा करते रहे। उसी क्षण, पहाड़ी पर तैनात अधिकांश धनुर्धारियों ने युद्ध की लूट को इकठ्ठा करने के लिए अपनी चौकी को छोड़ने का फैसला किया। पहाड़ का दर्रा अब असुरक्षित था और दुश्मन की घुड़सवार सेना खाई से होकर निकल गई और उल्लासित मुसलमानों पर टूट पड़ी। नतीजतन, 70 मुसलमान युद्ध के मैदान में मारे गए, जबकि केवल 22 कुरैश मारे गए। उहुद की जीत एक कड़वी हार में बदल गई। पैगंबर को छंद प्रकट किए गए जिससे यह स्पष्ट हो गया कि ये आपदा लालच की आध्यात्मिक बीमारी का परिणाम थी।

नादिरों का निष्कासन

4 हिजरी मे, अल्लाह के दूत को खुफिया जानकारी मिली कि नादिर के यहूदी मुसलमानों को धोखा देने की योजना बना रहे हैं। पैगंबर उनसे मिलने गए, लेकिन उन्होंने पैगंबर पर जानलेवा हमले का प्रयास किया। पैगंबर मौके से भाग आये और नदिरों को जाने के लिए 10 दिन का समय दिया। लेकिन उन्होंने युद्ध पर जोर दिया और कुछ अरब नेताओं के साथ गठबंधन करना शुरू कर दिया। उनके किले को घेरने के लिए एक मुस्लिम सेना भेजी गई। दस दिनों के बाद, पैगंबर ने आदेश दिया कि उनकी सबसे मूल्यवान संपत्ति, उनके ताड़ के पेड़ों को काट दिया जाए। उन्होंने अंततः आत्मसमर्पण कर दिया और उत्तर में कुछ सौ मील की दूरी पर खैबर के भारी किलेबंद शहर में स्थानांतरित हो गए। फिर उन्होंने आभार व्यक्त करने के बजाय तुरंत मुसलमानों के खिलाफ साजिश रचनी शुरू कर दी।

खाई की लड़ाई

नादिरों का प्रमुख हुयय मदीना के खिलाफ अंतिम हमले के लिए मक्का गया। वह आसानी से कुरैश को समझाने में कामयाब हो गया कि यह मुसलमानों के खिलाफ एक अंतिम हमले का समय है। अबू सुफियान ने अरब के विभिन्न हिस्सों से सहयोगियों को इकठ्ठा करना शुरू कर दिया। अरब के पूर्वी हिस्से से आने वाले 6000 सैनिकों के साथ-साथ कुरैश खुद भी 4000 सैनिकों को इकट्ठा करने में कामयाब रहे। सलमान अल-फ़ारसी, जो पैगंबर के साथी थे और मूल रूप से फारस के थे, उन्होंने लावा क्षेत्रों और गढ़वाले भवनों द्वारा बनाए गए रक्षात्मक मजबूत स्थानो के साथ-साथ एक खाई बनाने की एक विदेशी युद्ध रणनीति का सुझाव दिया। अरब युद्ध में यह कुछ नया था, लेकिन पैगंबर ने तुरंत योजना की खूबियों की सराहना की और काम तुरंत शुरू हो गया। पैगंबर ने खुद अपनी पीठ पर खुदाई से मलबे को ढोया। जब गठबंधन सेना पहुंची तो उन्होंने ऐसी सैन्य रणनीति का इस्तेमाल पहले कभी नहीं देखा था।

गठबंधन सेना के साथ आये हुयय ने मदीना मे एकमात्र शेष यहूदी जनजाति कुरैज़ा जो दक्षिण में रहते थे, उनको पैसे दिए और उन्हें मुसलमानों के साथ संधि तोड़ने के लिए आश्वस्त किया।

मुसलमानों की घेराबंदी लगभग एक महीने तक चली। अबू सुफयिान ने अंततः हार मानने का फैसला किया और उसके सहयोगी असफल होकर लौट आए। अल्लाह की मदद से न केवल मुसलमानों लड़ने से बचे बल्कि यिह उनके लिए एक प्रतीकात्मक जीत थी।

इस लेख का वेब पता

https://www.newmuslims.com/index.php/hi/articles/338

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।